ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष: 13 अंक: 151 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका दिसम्बर 2020

File Photo

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

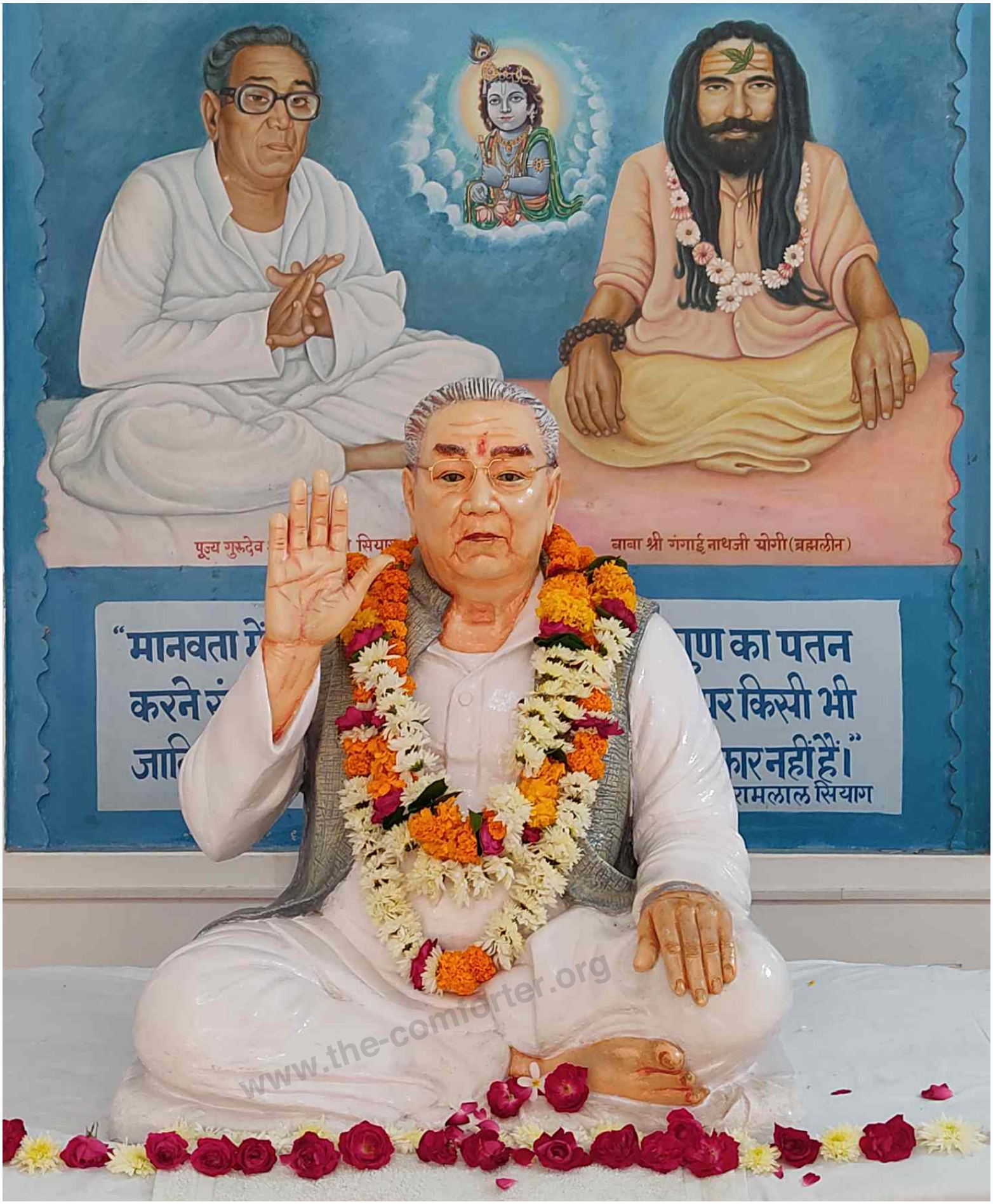

www.the-comforter.org

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन)

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष: 13 अंक: 151 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका दिसम्बर 2020

अनुक्रम

❖
संस्थापक एवं संरक्षक:
पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

❖
सम्पादक:
रामूराम चौधरी

कार्यालय:
स्पिरिचुअल साइंस पत्रिका

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो. बॉक्स नं. - 41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत
+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com

Head Office
Spiritual Science Magazine:
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Post Box No. - 41
Near Hotel Lariya, Chopasani,
Jodhpur (Raj.) India - 342001
+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com
Website:
www.the-comforter.org

भक्तियोग 4
आह्वान युवा शक्ति को (सम्पादकीय) 5-7
साधना विषयक बातें.....8-10
सच्ची मैत्री का स्वरूप 11
गुरुदेव के अवतरण दिवस की झलकियाँ 12-13
मानस की नीरवता.....14
गुरु वाक्य.....15
रूपान्तरण (Transformation).....16-18
अनुभूतियाँ 19-22
Distributing the Eternal Bliss.....23-25
भगवान् की अवतरण प्रणाली 26-28
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से.....29
भौतिक विज्ञान की सीमा 30
सद्गुरुदेव की दिव्य आवाज 31-33
गुरुदेव का प्रवचन (22 मई 2003) 34
योग के आधार.....35
सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण 36
ध्यान की विधि 37

भक्तियोग

भक्तियोग की सर्वोत्तम परिभाषा सम्भवतः (भक्त प्रहलाद की) इस प्रार्थना में निहित है:-'' हे ईश्वर ! अज्ञानी जनों की जैसी गाढ़ी प्रीति इन्द्रियों के नाशवान, क्षणभंगुर भोग्य पदार्थों पर रहती है, वैसी ही प्रीति मेरी तुझमें हो और तेरी सतत् कामना करते हुए मेरे हृदय से वह कभी भी दूर न हो ! हम देखते हैं कि जो लोग इन्द्रिय-भोग के पदार्थों से बढ़कर और किसी वस्तु को नहीं जानते, वे धन-धान्य, कपड़े-लत्ते, पुत्र-कलत्र, बन्धु-बान्धव तथा अन्यान्य विषयों पर कैसी दृढ़ प्रीति रखते हैं ! इन वस्तुओं के प्रति उनकी कैसी घोर आसक्ति रहती है ! इसलिए अपनी प्रार्थना में वे महात्मा कहते हैं, वैसी प्रबल आसक्ति , वैसी दृढ़ संलग्नता मुझमें केवल तेरे ही प्रति रहे।''

यही प्रीति जब ईश्वर के प्रति होती है, तब भक्ति कहलाती है। भक्ति विध्वंसात्मक नहीं होती, वरन उन्हीं के माध्यम से हमारी मुक्ति का स्वाभाविक मार्ग प्रशस्त है। भक्ति न तो हमारी किसी प्रवृत्ति का हनन करती है और न वह हमारी प्रकृति के विरुद्ध ही है, बल्कि केवल उसे अधिक उच्च शक्तिशाली दिशा देती है। इन्द्रिय-विषयों के प्रति हमारी कैसी स्वाभाविक प्रीति हुआ करती है ! ऐसी प्रीति किये बिना हम रह ही नहीं सकते, क्योंकि ये हमारे लिए इतने वास्तविक हैं।

-स्वामी विवेकानन्द

www.the-comforter.org

आह्वान युवा शक्ति को

वही क्रांति सफल होती है जिसमें युवा उत्साह और उमंग से कार्य करते हैं। इस संबंध में महर्षि श्री अरविन्द ने अपने विचार विस्तार रूप से प्रकट करते हुए युवा पीढ़ी का आह्वान किया जो आज भी न्यायसंगत है। उन्हीं के शब्दों में प्रस्तुत है युवा पीढ़ी को संबोधित करते हुए उनके ये अमर शब्द -

भविष्य है नई पीढ़ी के हाथ में। एक तरुण और नूतन जगत् विकास-पथ पर बढ़ चला है। इसके नव-सृजन का भार है इस नई पीढ़ी पर। साथ ही, यह सृष्टि जो जन्म ले रही है वह होगी सत्य, साहस, न्याय, उदात्त अभीप्सा और निश्छल, सरल, पूर्णता का जगत् भी ! कायर, स्वार्थी और बातूनी, जो प्रारम्भ में बड़े जोर-शोर से आगे बढ़ते हैं, पर संकट पड़ने पर अपने साथियों को छोड़ भाग खड़े होते हैं, भविष्य में उनका कोई स्थान नहीं....वीर, स्पष्टवक्ता, सरल-हृदय, साहसी और अभीप्सु तरुण ही एक मात्र वह आधार है, जिस पर हो सकता है भावी राष्ट्र का निर्माण।

हमारा आह्वान है तरूण भारत को, नवयुवकों को, जिन्हें बनना है नये जगत् का निर्माता,-वे नवयुवक, जिनके मन-प्राण स्वतन्त्र हैं एक महतर आदर्श के लिए, एक पूर्णतर सत्य और श्रम को स्वीकारने के लिए। वे ऐसे हों जिनका जीवन भूत और वर्तमान के लिए नहीं, अपितु भविष्य के लिए समर्पित हो। उन्हें अपना जीवन उत्सर्ग करना पड़ेगा, अपनी निम्न प्रकृति को उन्नत करने में। उन्हें अपना जीवन निवेदन करना होगा अपने में और सारी मनुष्य जाति में भगवान् का साक्षात्कार करने के निमित। इसी को पूरी लगन व अथक परिश्रम से राष्ट्र और मानवता के लिए उन्हें साधना होगा।

भारत को स्वावलम्बी बनाने और उन दिनों की तरह विश्व के राष्ट्रों में सिर ऊँचा करने के लिए महान् बनें। जो गरीब और सामान्य रहें, उनकी गरीबी और सामान्यता भी मातृभूमि को समर्पित हो। राष्ट्र के इतिहास में एक समय होता है जब एक ही कार्य का महत्त्व होता है।

एक उद्देश्य के लिए, बहुत सारी महान् चीजों का भी त्याग करना पड़ता है। भारत के लिए ऐसा ही समय आ गया है, जब मां की सेवा से अधिक प्रिय और कोई चीज नहीं और सभी कुछ इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए है।

यदि तुम पढ़ो तो भारत मां के लिए पढ़ो। उसकी सेवा के लिए शरीर, मन और आत्मा को समर्थ बनाओ। जीविका इसलिए कमाओ ताकि तुम मां के लिए जीवित रह सको। विदेश जाओ तो वह ज्ञान ला सको जिससे मां की सेवा हो सके। काम करो ताकि माँ समृद्ध हो, कष्ट सहो ताकि मां प्रसन्न हो।

हम प्रत्येक व्यक्ति से कहते हैं और विशेषतया उन युवकों से जो अब भारत का काम, संसार का काम,

www.the-comforter.org

ईश्वर का काम करने के लिए उठ रहे हैं; यदि तुम अपने मनों को यूरोपीय विचारों का गुलाम बना दोगे या जीवन को भौतिक वा जड़वादी दृष्टिकोण से देखोगे तो तुम इन आदर्शों को धारण नहीं कर सकोगे और इन्हें सफल करना तो तुम्हारे लिए और भी कठिन होगा। भौतिक दृष्टि से तुम कुछ नहीं हो, आध्यात्मिक दृष्टि से तुम सब कुछ हो। एक मात्र भारतीय ही प्रत्येक चीज पर विश्वास कर सकता है, प्रत्येक काम करने का साहस कर सकता है, प्रत्येक चीज का बलिदान कर सकता है। इसलिए सबसे पहले भारतीय बन जाओ। वेदान्त, गीता और योग को फिर से प्राप्त करो। उन्हें केवल बुद्धि या भावना से ही नहीं अपितु जीवन द्वारा पुनः जीवित कर दो। उन्हें जीवन में लाओ और तुम महान्, दृढ़, अजेय तथा निर्भय हो जाओगे। तब तुम्हें न तो जीवन भयभीत कर सकेगा और न मृत्यु। 'कठिन' और 'असम्भव' शब्द तुम्हारे शब्दकोशों से विलुप्त हो जायेंगे। क्योंकि एकमात्र आत्मा ही शाश्वत एवं अनंत बल से युक्त है। अतःपहले तुम्हें आत्मराज्य, आंतरिक स्वराज्य को जीतकर वापस ले लेना होगा, उसके बाद ही तुम बाह्य साम्राज्य को वापस ले सकोगे। वहाँ (आत्मा में) ही माता विराजमान है और वह पूजा की प्रतीक्षा कर रही है। ताकि वह शक्ति दे सके। उसमें विश्वास रखो, उसकी सेवा करो। अपनी इच्छाओं को उसकी इच्छा में, अपनी 'मैं' को देश की बड़ी 'मैं' में, अपनी पृथक् स्वार्थपरता को मानवता की सेवा में विलीन कर दो। सम्पूर्ण शक्ति के स्त्रोत को अपने में फिर से प्राप्त कर लो तो तुम्हें आ मिलेगा- सामाजिक स्वस्थता, बौद्धिक प्रमुखता, राजनीतिक स्वाधीनता, मानव-विचार पर प्रभुत्व और संसार का नेतृत्व।' परोपकार करना धर्म है, आश्रित की रक्षा करना महाधर्म है। केवल भाई-बहन को कुछ देने से ही हिसाब नहीं चुक जाता।

परिवार के लिये अपने आराम को त्याग देना, यह एक ऐसी अवस्था है जिसे बहुत मनुष्य प्राप्त कर चुके हैं, स्त्री के सम्मान या घर की सुरक्षा के लिये अपने जीवन का उत्सर्ग कर देना, एक उच्चतर प्रकृति का कार्य है, जिसमें मनुष्य व्यष्टि-रूप में तथा विशेष वर्गों के रूप में भी समर्थ होता है, परन्तु समष्टि-रूप में नहीं। परिवार के बाद समाज या संघ आता है। यह स्वीकार करना कि मनुष्य पर अपने परिवार की अपेक्षा अपने संघ का अधिक बड़ा दावा है, सामाजिक अवस्था की ओर प्रगति की सबसे पहली शर्त है।

आत्मबलिदान का भाव सब राष्ट्रों और सभी व्यक्तियों में आम नहीं है, यह दुर्लभ और अति उत्कृष्ट है। यह मनुष्य जाति की नैतिक उन्नति का पुष्पित रूप है। स्वार्थरत पशुत्व से स्वार्थरहित देवत्व की ओर हमारे क्रमिक उदय का प्रमाण है। जिस मनुष्य में आत्मबलिदान का सामर्थ्य है, उसने पशुत्व को अपने से दूर तज दिया है, चाहे उसके अन्य प्रकार के पाप कितने भी क्यों न हों। उसमें भावी और उच्चतर मानवता के निर्मण की सामग्री है। जो राष्ट्र, राष्ट्रीय तौर पर आत्मबलिदान करने का सामर्थ्य रखता है, उसका भविष्य सुरक्षित है।

विशालतर राष्ट्रीय स्वार्थ पर अपने स्वार्थ, पारिवारिक स्वार्थ, वर्ग के स्वार्थ की बलि चढ़ाने के लिये उद्यत रहना ही मानवता की राष्ट्र के रूप में पूर्णता-प्राप्ति की शर्त है और इसकी भलाई या सुरक्षा के लिये मर-मिटना विशालतर राष्ट्रीय 'अहं' में आत्मा की पूर्णता-प्राप्ति का परम कार्य है। इससे भी अधिक ऊँचा एक पूर्णता है जिसके लिये कुछ एक व्यक्तियों के निज स्वार्थ की बलि चढ़ा देने से इस दिशा में आगे कदम बढ़ाया जा चुका है, परन्तु राष्ट्र के हितों का मानवता के विशालतर हित पर बलिदान कर डालना एक ऐसा कार्य है जिसके लिये मानवता समष्टि-रूप में अभी तक तैयार व समर्थ नहीं हुई है। परमेश्वर

www.the-comforter.org

तैयारी करता है, पर वह फल को उस की ऋतु से पहले पकाने की जल्दी नहीं करता है। एक समय आवेगा, जब यह भी संभव होगा, परन्तु वह समय अभी नहीं है।

कोई धनी है, केवल इसीलिए उसके सामने सिर नीचा मत करो, उसके आडम्बर शक्ति या प्रभाव के वश में मत आओ। मां के लिए जब तुम किसी से कुछ माँगो तो यह प्रतीत होना चाहिये कि मां ही तुमसे अपनी वस्तु का अंश भर माँग रही है और जिस व्यक्ति से इस तरह माँगा जाय, वह इसका क्या जवाब देता है उसी से होगी उसकी परीक्षा।

वे लोग जो अपने पर गर्व करते थे कि महान् घटनाएँ हमारा कार्य हैं, क्योंकि उनमें शुरू में उनका हाथ दिखायी देता था, काल की खाई में जा गिरते हैं और दूसरे लोग उनकी विध्वस्त ख्यातियों को रौंदते हुए आगे बढ़ते हैं। वे लोग जो अपने अंदर स्थित काली से वेगपूर्वक आगे बढ़ाये चले चलते हैं और दैव के साथ कोई समझौता नहीं करते, वे ही जीवित रहते है। व्यक्तियों की महता अन्तःस्थित नित्य शक्ति की महता है।

आर्य शिक्षा के अंदर विद्वेष या घृणा का स्थान नहीं। नारायण सर्वत्र हैं; भला किससे विद्वेष करें, किससे घृणा करें? अगर हम पाश्चात्य ढंग का राजनीतिक आंदोलन करें तो फिर विद्वेष और घृणा का आना अनिवार्य है; और यह पाश्चात्य मतानुसार निन्दनीय नहीं है। एक ओर उत्थान और दूसरी ओर दमन हो रहा है। परन्तु हमारा उत्थान केवल आर्य जाति का उत्थान नहीं है, प्रत्युत आर्य-चरित्र, आर्यशिक्षा, आर्यधर्म का उत्थान है। इस आंदोलन की प्रारंभिक अवस्था में पाश्चात्य राजनीति का प्रभाव बहुत प्रबल था, फिर भी उस प्राथमिक अवस्था में भी यह सत्य अनुभूत हुआ है; मातृपूजा, मातृप्रेम और आर्य- अभिमान के तीव्र अनुभव से धर्मप्रधान द्वितीय अवस्था प्रस्तुत हुई है। राजनीति धर्म का अंग है, परन्तु उसका आचरण आर्य-भव के साथ, आर्य- धर्मानुमोदित उपाय से करना चाहिये। हम भावी आशास्वरूप युवक दल से यह कहते हैं कि यदि तुम्हारे प्राणों में विद्वेष हो तो उसे शीघ्र ही जड़ से निकाल फेंको। विद्वेष की तीव्र उत्तेजना से क्षणिक रजःपूर्ण बल आसानी से जाग्रत होता है। जिन लोगों ने देशोद्धार करने की प्रतिज्ञा की है और उसके लिए अपने प्राण उत्सर्ग कर दिये हैं उनके अन्दर प्रबल भ्रातृभाव, कठोर उद्यमशीलता, लौहसम दृढ़ता और ज्वलन्त- अग्नितुल्य तेज का संचार करो, उसी शक्ति से हमें असीम बल प्राप्त होगा और हम चिरविजयी हो सकेंगे।

श्री अरविन्द के उपरोक्त शब्दों को पढ़कर अनेकों युवकों को समय-समय पर अपनी मातृभूमि के लिए पूर्ण रूप से समर्पित होने की प्रेरणा मिली। आज भी नए भारत को आवश्यकता है ऐसे ही समर्पित नव युवकों की जो देश के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को दृढ़ संकल्प हों।

गतांक से आगे...

साधना विषयक बातें

योगमार्ग पर आराधनाशील साधक को विभिन्न प्रकार के पहलुओं का सामना करना होता है। कभी उतार, कभी चढ़ाव, मानसिक उद्वेग, कभी हँसी-खुशी, कभी बेबसी, उदासीनता, काम, क्रोध और न जाने इस योग मार्ग की यात्रा में कितने ही पड़ाव और हर मोड़ पर चौराहा और थोड़ी देर बाद दूसरे मोड़ पर फिर चौराहे आते हैं, जिससे साधक दिग्भ्रमित हो जाता है यदि उस पर सद्गुरुदेव की असीम कृपा बराबर न बनी रहे तो।

मानव से अतिमानत्व की यात्रा में, दिव्य रूपान्तरण के लिए सफलता तभी संभव है जब साधक अपने सद्गुरु के बताए पथ पर निष्कपट भाव से, गाढ़ी प्रीति रखते हुए पूर्ण समर्पण भाव से आराधना करे। श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि श्री अरविन्द घोष, श्रीमां सहित कई प्राचीन योगियों के समय, उनके शिष्यों से उनका जो वार्तालाप हुआ है, उसको समय समय पर इस शीर्षक के अंतर्गत देंगे जिससे आराधनाशील साधकों को इस मार्ग में सहायता मिल सके।

इस समय यह प्राणिक गड़बड़ें कुछ लोगों में बार-बार हो रही हैं। एक से होकर दूसरे में जा रही है, एक रोग की तरह। ज्यादातर भाव यह रहता है कि मैं मर जाऊं, यह शरीर न रखूँ, इस शरीर से योगसाधना नहीं होगी, यही भाव प्रबल होता है। लेकिन यह शरीर छोड़ दूसरा शरीर धारण करने पर बिना बाधा के योगसिद्धि होगी यह धारणा बिलकुल भ्रांत है। बस इस भाव से यह देह त्यागने पर दूसरे जन्म में ज्यादा बाधाएँ आयेंगी और शक्ति के साथ संबंध रहेगा ही नहीं। यह सब है विरोधी शक्तियों का आक्रमण, उनका उद्देश्य है साधकों की साधना भंग करना, आश्रम का और हमारा काम भंग कर देना। तुम सजग रहना, इन सबको अपने अंदर घुसने मत देना।

बाहर के लोग मुझे डांटते हैं, मुझे चोट पहुँची है, मैं मर जाऊंगी, ये बातें हैं प्राणिक अहंकार की, साधक की नहीं। मैं तुम्हें सतर्क कर चुका हूँ, अहंकार को तूल न दो। कोई यदि कुछ बात कहता है तो अविचलित रहो, शांत, सम, निरहंकार भाव से रहो, शक्ति के साथ जुड़ी रहो।

सूर्य के अनेक रूप होते हैं, बहुत-से रंगों के प्रकाश का सूर्य, जैसे लाल वैसे ही हिरण्यमय, नीला, हरा इत्यादि।

इस तरह शक्ति में मिल जाना ही है असली मुक्ति का लक्षण।

इस तरह शरीर में ज्योति फैल जाने से physical (शारीरिक) चेतना का रूपांतर संभव हो जाता है।

सोते समय चेतना एक-

www.the-comforter.org

पर-एक कई स्तरों में जाती है। जगत् पर जगत् जैसा है वैसा स्वप्न देखती है। बुरे स्वप्न हैं प्राण जगत् के कुछ प्रदेशों के दृश्य और घटना-मात्र-और कुछ नहीं।

प्रश्नः- श्रीमां, दो दिन से प्रणाम करके आने के बाद अवस्था मानों कुछ और ही हो जाती है, कुछ भी अच्छा नहीं लगता। कहां जाऊं, कहां जाने से श्रीमां मिलेंगी, भगवान् मिलेंगे, शांति और आनंद मिलेंगे और कब अपने को श्रीमां को दे सकूँगी-ऐसे विचार उठते हैं।

उत्तरः- ऐसे विचारों को घुसने मत दो-इन्हीं विचारों ने बहुतों के अंदर घुसकर उनकी साधना में विषम व्याघात पहुँचाया है-इससे मां के प्रति असंतोष, अस्थिर चंचलता, चले जाने की इच्छा, मर जाने की इच्छा, स्नायविक दुर्बलता इत्यादि घुस पड़ते हैं। जो एक तामसिक शक्ति आश्रम में घूमती-खोजती फिर रही है कि किसको पकड़ें, वही शक्ति ये सब अज्ञानमयी चिंताएँ घुसा देती है, इन feelings (चिंता विचारों) का कोई सिर-पैर नहीं होता-मां को छोड़ कहां जाकर मां को पाओगी। शांति और आनंद लाभ करोगी। इन सब को पल-भर के लिये भी प्रश्रय मत देना।

सांप है प्रकृति की शक्ति - मूलाधार (physical centre) है उसका प्रधान स्थान-वह वहाँ कुंडलित अवस्था में सोयी रहती है। जब साधना करने से जगती है तब सत्य के साथ मिलने के लिये ऊपर की ओर उठती है। शक्ति के अवतरण से वह इस बीच स्वर्णमय हो उठी है, अर्थात् भागवत सत्य की ज्योति से ज्योतित।

नहीं, यह कल्पना या मिथ्या नहीं है-ऊपर का मन्दिर ऊर्ध्व चेतना का है, नीचे का मन्दिर इस मन, प्राण, शरीर की रूपांतरित चेतना है-मां ने नीचे उतर इस मंदिर को गढ़ा है और वहां से तुम्हारे अंदर सर्वत्र सत्य का प्रभाव फैला रही हैं।

प्रश्नः- मैं तुम्हारे चरणों के पास क्यों कुछ नहीं देखती और अनुभव करती, सब कुछ तुम्हारी गोद और हृदय से ही क्यों अनुभव करती हूँ ?

सबके साथ प्रायः ऐसा ही होता है-हृदय से ही मां की सृष्टि और शक्ति बाहर निकल सबके अंदर अपना काम करती है। और स्थानों पर से भी करती है लेकिन केंद्र है हृदय।

समीपता और भीतर शक्ति की सन्निधि को feel (अनुभव) करना, शक्ति ही सब कर रही हैं ऐसा अनुभव करना, शक्ति का सब कुछ अपने भीतर ग्रहण करना ही साधना है। ऐसी अवस्था रहने पर और मन लगाकर पढ़ने से कोई क्षति नहीं हो सकती।

शक्ति तुम्हें चाहती है और तुम शक्ति को। तुम शक्ति को पा रही हो, और भी पाओगी।

फिर भी हो सकता है कि तुम्हारी physical consciousness (भौतिक चेतना) में बीच-बीच में यह आकांक्षा जग उठे कि जो शक्ति का बाहरी घनिष्ठ संबंध और शारीरिक सान्निध्य इत्यादि हैं, वह होना चाहिये। मां वह सब मुझे क्यों नहीं देतीं, शायद मुझे नहीं चाहतीं। किंतु जीवन और साधना की इस अवस्था में वैसा हो नहीं सकता। देने पर भी उससे साधक

www.the-comforter.org

उसी में मशगूल हो जायेगा और असली भीतरी रूपांतर और साधना होंगी नहीं। मैं सिर्फ शक्ति का आंतरिक घनिष्ठ संबंध और सान्निध्य एवं रूपांतर चाहती हूँ-बाह्य तन, मन, प्राण भी संपूर्ण रूप से ऐसा अनुभव करेंगे और रूपांतर होगा। ऐसा ही मानकर चलो।

प्रश्नः- बीच-बीच में लगता है कि सारी सत्ता खूब खुलकर रो ले तो बहुत कुछ परिवर्तित हो जायेगा। मां, तुम्हारे लिये अब रोने-धोने की जरूरत है क्या ?

उत्तरः- रोना यदि psychic being (चैत्य) का हो, सच्ची -शुद्ध चाहना या चैत्य भाव का क्रन्दन-पुकार हो तो ऐसा फल हो सकता है। Vital (प्राणिक) दुःख या कामना या निराशाजनित रोना-धोना करने से तो सिर्फ हानि ही होती है।

मैं यह बात बहुत बार बता चुका हूँ कि मनुष्य की बाहरी चेतना का पूर्ण रूपांतर थोड़े समय में नहीं होता। भागवत शक्ति उसे धीरे-धीरे बदलती जाती है जिससे अंत में कुछ बचा नहीं रह जाता, क्षुद्रतम भाग में भी निम्न प्रकृति की कोई पुरानी हरकत नहीं रह जाती। इसलिये अधीर न हो। उतावली नहीं करते। सिर्फ सब कुछ समर्पित करना होता है, शक्ति के प्रति खोलना होता है। बाकी सब धीरे-धीरे ठीक हो जायेगा।

प्रश्नः- काम-काज करते हुए, चलते-फिरते, अंदर-बाहर हर समय एक ही अवस्था-शांत, नीरव (Noiseless) और आनंदित।

उत्तरः- यह बहुत अच्छी है-पूर्ण समता और असली ज्ञान की अवस्था-जब यह स्थायी हो जाती है तब कह सकते हैं कि साधना ने जड़ पकड़ ली है।

मूलाधार का स्वर्णिम सर्प-रूपांतरित सत्यमयी शरीर-चेतना का प्रतीक।

तुम यदि भीतर शांत और समर्पित रहो तो बाधा-विघ्न इत्यादि तुम्हें विचलित नहीं करेंगे। अशांति, चंचलता और 'क्यों नहीं हो रहा, कब होगा' आदि भावों को घुसने देने से बाधा-विघ्नों को बल मिलता है। तुम बाधा-विघ्नों की तरफ इतना ध्यान देती ही क्यों हो ? मां की ओर निहारो। अपने अंदर शांत और समर्पित बनी रहो। निम्न प्रकृति के छोटे-छोटे defect (दोष) आसानी से नहीं जाते। उनके कारण विचलित होना व्यर्थ है। जब मां की शक्ति संपूर्ण सत्ता और अवचेतना पर पूर्ण प्रभुत्व पा लेगी तब होगा- इसमें यदि बहुत दिन लग जायें तो भी क्षति नहीं। सर्वांगीण रूपांतर के लिये बहुत समय की आवश्यकता होती है।

ऊपर जो खूब बड़ा-सा कुछ है वह है ऊर्ध्व चेतना की असीम विशालता। तुम्हें जो यह अनुभव हो रहा है कि सिर घूम-घूम कर नीचे आ रहा है, वह स्थूल मस्तक तो निश्चय ही नहीं है, वह है मनबुद्धि। वह उस विशालता में उठकर इसी तरह नीचे आता, कितनी दूर आ गयी हूँ और कितनी दूर जाना है, इन सब प्रश्नों का कोई लाभ नहीं। शक्ति (गुरु) को खिवैया बनाकर प्रवाह में बढ़ती चलो, वे तुम्हें गंतव्य स्थान पर पहुँचा देंगी।

www.the-comforter.org

सच्ची मैत्री का स्वरूप

दस वर्ष बीत गये – प्रकाश की किरण न दिखी। और दस वर्ष बीते। हजारों बार निराशा आयी। पर इन सब के बीच हरदम आशा की एक किरण बनी रही, और वह था हम लोगों का उत्कट पारस्परिक सहयोग, हमारा आपसी प्रेम। आज हमारे साथ लगभग सौ साथी हैं – स्त्री और पुरूष। वे ऐसे हैं कि यदि मैं एक बार शैतान भी बन जाऊँ तो भी वे ढाढ़स बँधाते हुए कहेंगे, 'अरे अभी हम हैं ! हम तुम्हें कभी भी न छोड़ेंगे !' और सचमुच यह बड़ा सौभाग्य है। सुख में, अकाल में, दर्द में, कब्र में, स्वर्ग में, नरक में जो मेरा साथ न छोड़े, सचमुच वही मेरा मित्र है। ऐसी मैत्री क्या हँसी मजाक है ? इसी से तो मानव को मोक्ष तक मिल सकता है। सचमुच मोक्ष ऐसा ही प्रेम करने से आता है।

–स्वामी विवेकानन्द

गुरुदेव के अवतरण दिवस की झलकियाँ

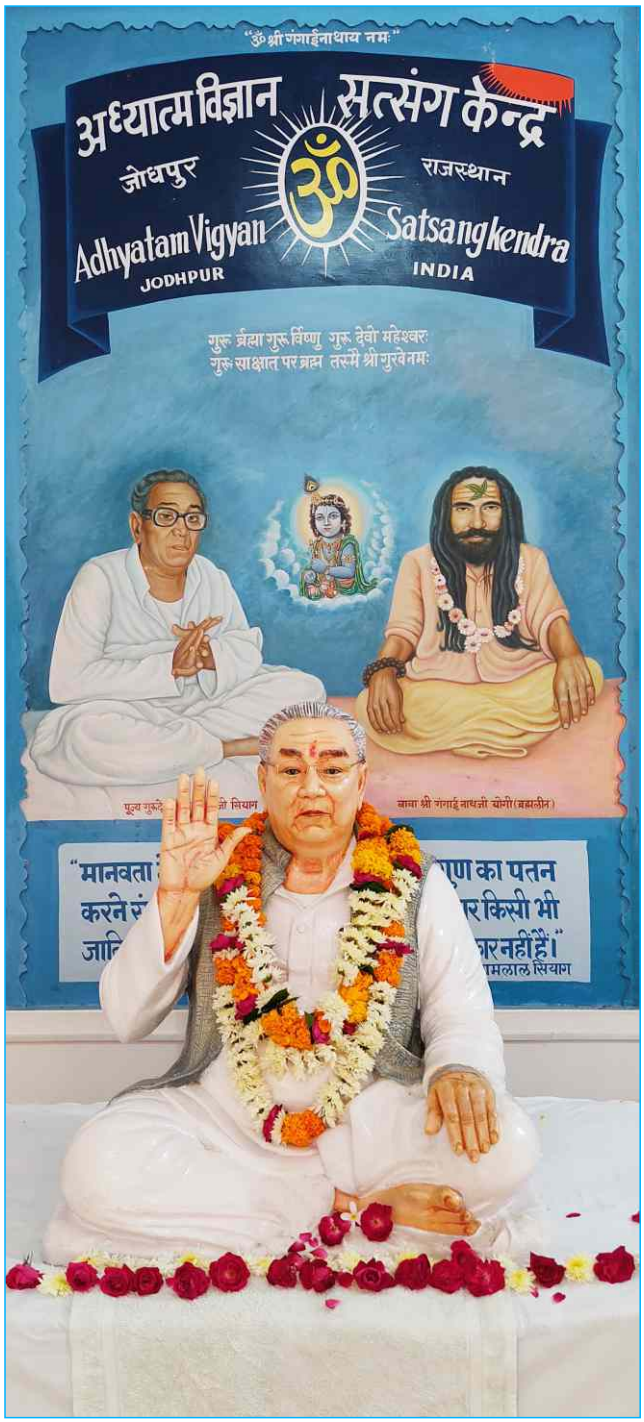

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर आश्रम में गुरुदेव के 95वें अवतरण दिवस पर उनकी पूजा अर्चना के बाद, वर्ष 2021 के कैलेण्डर का विमोचन।

गुरुदेव के अवतरण दिवस पर विभिन्न शाखाओं की झलकियाँ

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा-कोटा

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा-सिमोगा, कर्नाटक

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा-गंगापुर सिटी

शाखा-बालेसर

शाखा-बाड़मेर

गतांक से आगे...

मानस की नीरवता

अतः हम एक नए देश की खोज में हैं, परन्तु यह बता देना ठीक होगा कि उस देश जिसे हम छोड़ रहे हैं और उसके जिसका अभी आविर्भाव नहीं हुआ, इन दोनों चेतना की अपूर्व यात्रा के बीच एक काफी कष्टकर निर्जन भूमि है। यह एक परीक्षा-काल है जो हमारे संकल्प की दृढ़ता के अनुसार कम या अधिक लंबा होता है।

इस संक्रमण काल में सबसे कठिन परीक्षा है आन्तरिक शून्य की। मानसिक उत्तेजना में रह चुकने के बाद मनुष्य सहसा अपने आप को बीमारी से उठे आदमी की तरह लड़खड़ाता सा पाता है, सिर में एक अजीब गूँज सी होती है मानो यह संसार बेहद शोरगल से भरी थकाने वाली जगह हो। संवेदनशीलता अत्यधिक तीव्र हो जाती है जिसके कारण उसे सब तरफ से चोट सी लगती है; लोग नासमझ और झगड़ालू, वस्तुएँ स्थूल और परिस्थितियाँ कठोर प्रतीत होती हैं -संसार बहुत ही बेतुका मालूम पड़ता है।

यह अंतप्रवृत्ति के प्रारंभ का स्पष्ट लक्षण होता है। तो भी, यदि मनुष्य ध्यान की क्रिया द्वारा सचेत रूप से अंदर उतरने का प्रयास करे तो वैसा ही शून्य मिलेगा, एक अंधकूप सा अथवा एक निराकार निष्क्रियता सी दिखती है। यदि मनुष्य अवरोहण के लिए उद्योग करता ही जाये तो कुछ क्षण, दस क्षण, दो मिनट, कभी इससे भी अधिक समय के लिए वह सहसा नींद में डूब जाता है-वास्तव में वह साधारण नींद नहीं होती। हम केवल एक दूसरी चेतना में चले जाते हैं पर इन दोनों को जोड़ने वाली कड़ी अभी है नहीं और हम वहाँ जैसे थे देखने में उससे कुछ बेहतर होकर नहीं लौटते। यह बीच की स्थिति मनुष्य को आसानी से एक प्रकार के असंगत शून्यवाद में पहुँचा सकती है... बाहर कुछ नहीं है, पर भीतर भी कुछ नहीं। दोनों ओर शून्य। यहाँ बहुत ही सावधान रहना आवश्यक है कि अपनी मानसिक बाह्य रचना को ढहा देने के बाद हम फिर से एक मिथ्या गहराई में न कैद हो जाये ।एक नई असंगत, भ्रान्त

www.the-comforter.org

या अविश्वासी रचना में न फंस जायें जो संभवत: विद्रोही तक हो। आगे बढ़ना आवश्यक है।

जब एक बार योगसाधना शुरू कर दी तब चाहे जो भी हो अन्त तक जाना चाहिए क्योंकि सूत्र एक बार छोड़ने पर खतरा है कि वह फिर कभी हाथ न आये। असल में परीक्षा यही है। साधक को केवल यह समझ लेना चाहिए कि उसने एक भिन्न लोक में जन्म लेना शुरू किया है और पृथ्वी पर पदार्पण करने वाले एक नवजात शिशु की तरह ही उसकी भी नई आँखें, नई इन्द्रियाँ अभी बनी नहीं हैं। यह चेतना की अवनति नहीं है बल्कि एक नवीन चेतना में संक्रमण है। प्याला खाली और साफ कर रखना जरूरी है ताकि दिव्य सोम उसके अन्दर ढाला जा सके । इस दशा में हमारे पास एक ही उपाय है कि अपनी अभीप्सा को कसके पकड़े रखें और उसे आगे ही आगे बढ़ने दें, ठीक इस प्रकार के तीव्र अभाव द्वारा ही अभीप्सा को उस अग्नि की तरह उद्दीप्त करें जिसमें हमने अपनी सब पुरानी चीजें, पुरानी जिन्दगी, पुराने विचार, अपने सारे भाव झोंक दिये हैं -केवल हमारा अटूट विश्वास बना हुआ है कि उस संक्रमण के बाद एक द्वार खुलेगा । और हमारा यह विश्वास अनुचित नहीं है: यह सरल आदमी का भोलापन नहीं बल्कि पूर्व-ज्ञान है, हमारे अन्दर कोई वस्तु है जो हमसे पहले जानती है, हमसे पहले देखती है और आवश्यकता, अन्वेषण, विवरणातीत विश्वास के रूप में अपनी दृष्टि ऊपरी तल पर प्रेषित करती है। श्री अरविन्द का कथन है, विश्वास एक अन्तर्ज्ञान है जो सत्य प्रमाणित होने के लिए केवल अनुभव की अपेक्षा नहीं करता है बल्कि अनुभव तक पहुँचा देता है।

धीरे -धीरे यह शून्य भरने लगता है। एक के बाद दूसरे अनेक अत्यावश्यक निरीक्षण और अनुभव मनुष्य करता है जिन्हें तर्कयुक्त अनुक्रम में डालना गलत होगा क्योंकि पुरानी दुनिया से बाहर निकलते ही मनुष्य देख लेता है कि सब कुछ होना संभव है और विशेषत: दो स्थितियाँ कभी एक सी नहीं होती - इसी कारण आध्यात्मिक क्षेत्र में हठधर्मिताओं की स्थापना भूल है। केवल अनुभव की कुछ सामान्य रेखाएँ ही हम अंकित कर सकते हैं।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गुरु वाक्य

ये शरीर गुरु नहीं है, ये तो कल चला जाएगा। मंजिल तक पहुँचने के लिए चलना तो आप को ही पड़ेगा, मतलब उसका नाम तो जपना ही पड़ेगा।

– समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

गतांक से आगे...

रूपान्तरण (Transformation)

मनुष्य सृष्टि की सर्वोच्च कृति है लेकिन अभी इस कृति में बहुत सारी अपूर्णता है जो अगले विकास में इन अपूर्णताओं को पूर्ण किया जा सकता है और वह है-अतिमानव। एक ऐसा दिव्य मानव जो रोग, शोक, और दुःख-दर्दों से रहित होगा।

वर्तमान मानव और अतिमानव में इतना भारी अंतर होगा कि अभी किसी से तुलना, कर ही नहीं सकते। महर्षि श्री अरविन्द के अनुसार मानव मात्र का दिव्य रूपान्तरण हो जाएगा। इस कार्य के लिए उन्होंने आध्यात्मिक तपस्या करके सृजनकर्ता को, भूमण्डल पर अवतरित होने के लिए करूण पुकार की। नये युग अर्थात् सत्युग के आगमन और नये जगत् के निर्माण के लिए 24 नवम्बर 1926 को भूमण्डल पर परमसत्ता का भौतिक में अवतरण हुआ। उस अवतरित शक्ति ने 1968 से अपना कार्य प्रारम्भ किया। गहन आराधना के बाद मनुष्य मात्र के रूपान्तरण के लिए संजीवनी मंत्र की दीक्षा दी और लाखों लोगों को चेतन कर दिया।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का मुख्य उद्देश्य है-संपूर्ण मानव जाति का दिव्य रूपान्तरण।

इस रूपान्तरण के कार्य के लिए श्री अरविन्द ने विस्तार से समझाया है कि यह कैसे पूर्ण होगा? साधकों के ज्ञान-बोध के लिए यह लेख दिया जा रहा है-

---

केवल अति- साथ संयुक्त करता है, और वह सचमुच मानसिक जीव बाह्य कुछ-कुछ उसी तरह जैसे कवि है क्योंकि वह जिस पदार्थों को काम में न कि एक चित्रकार चित्र चीज को नाम देता है, लाकर सत्य स्पंद का सृजन के लिए विविध उसका सृजन करता है। उपयोग करता है जो वर्णों का संयोग बिठाता वस्तु का सच्चा नाम प्रत्येक वस्तु के केन्द्र में है अथवा एक कवि होता है वह स्पंद जिससे निहित है और अपेक्षित काव्य-रचना के लिए उसका निर्माण हआ है। परिणाम प्राप्त करने के अनेक ध्वनियों में मेल किसी वस्तु को नाम देने लिए उसे दूसरे स्पंदों के बिठाता है।

www.the-comforter.org

का अर्थ है उसे संघटित या विघटित करने की क्षमता रखना।

अतिमानसिक जीवन की नैसर्गिकता, सहज-स्वाभाविकता क्योंकि अंततः एकमात्र परम सत्य ही स्वाभाविक है- अतिमानसिक कला में भी प्रकट होगी। कला हमारे निजी आध्यात्मिक स्वर विशेष को सीधे, अनवगुंठित रूप में व्यक्त करेगी, ऐसी कला जिसमें धोखा नहीं चलेगा, क्योंकि एकमात्र हमारी आंतरिक ज्योति ही जड़तत्त्व में अंतर्वलित अपने सदृश ज्योतियों पर कार्य कर सकेगी और उसमें से समरूप रूपाकृतियों को बाहर लाने में समर्थ होगी। यदि हमारा स्पंद धूसर है, तो हमारी दुनिया भी धूसर होगी और जो भी हम स्पर्श करेंगे सब धूसर होगा। हमारा भौतिक परिवेश, बाह्य वातावरण हमारे आंतरिक वातावरण के अनुरूप होगा।

हमारे लिए केवल वही अभिव्यक्त करना संभव होगा, जो हम आप हैं। और जीवन स्वयं कलाकृति बन जायेगा। हमारे कार्यक्षेत्र होंगे हमारी अंतरवस्था की परिवर्तनशील बाह्य सज्जा। वाक् भी केवल हमारे अंदर की सच्ची अध्यात्म-शक्ति द्वारा ही बलयुक्त होगी। वह एक सजीव मन्त्र होगा, एक प्रत्यक्ष भाषा, उतनी ही चक्षुर्ग्राह्य जैसे कि मुख पर भावावेशों की झलक। और झूठे पाखंडों का अंत हो जायेगा चाहे वे राजनीति से संबंध रखते हों या धर्म से, अथवा साहित्य, कला और भावनाओं से ।

एक दिन एक शंकाशील शिष्य के यह कह डालने पर कि अतिमानस एक असंभव परिकल्पना है, क्योंकि सबसे पहली बात है कि न पहले कभी किसी ने यह देखा, न किया, श्री

www.the-comforter.org

अरविन्द ने अपनी स्वाभाविक परिहास शैली में उसे उत्तर दिया था-वाह, क्या कमाल की युक्ति है ! क्योंकि यह कभी किया नहीं, इसलिए किया भी नहीं जा सकता । इस हिसाब से तो पृथ्वी की सारी कहानी जीविफेन (प्रोटोप्लाजम) से बहुत पहले ही समाप्त हो जानी चाहिए थी। एक समय था जब यह गैसों का पुंज भर था और किसी प्रकार के जीवन का आविर्भाव नहीं हुआ था, अतः जीवन का आविर्भाव नहीं हो सकता था।

श्री माँ के शब्दों में बहुत ही सूक्ष्म कार्य है यह। क्योंकि सवाल क्षणिक चमत्कारों के सृजन का नहीं, बल्कि प्रत्येक अणु-परमाणु में, प्रत्येक कोशाणु में समायी हुई चित्-शक्ति को उन्मुक्त कर एक नवीन भौतिक आधार की प्रतिष्ठा का है। शायद इससे कोई यही समझ बैठे कि देह में यह कार्य करने का मतलब है किन्हीं मनो- दैहिक विधियों का, कुछ- कुछ हठयोग की सी क्रियाओं का प्रयोग, किन्तु ऐसा कुछ नहीं है। चेतना ही है जो मुख्य लीवर का काम करती है- चेतना का रूपांतर प्रमुख साधन बनेगा।

और श्री अरविन्द इस सरल सत्य को अपनी स्वाभाविक विशदता के साथ इस प्रकार हमारे सामने रखाते है । -विकासक्रम की पहली अवस्थाओं में प्रकृति का ध्यान और प्रयत्न सबसे पहले भौतिक संगठन के रूपांतर पर संकेन्द्रित होना आवश्यक था, क्योंकि चेतना का परिवर्तन केवल इसी तरह हो सकता था। उस समय तक साकार हुई चेतना की शक्तिशरीर में परिवर्तन लाने के लिए पर्याप्त नहीं थी, इसी कारण यह जरूरी था।

क्रमशः अगले अंक में...

असीम शांति व आनन्द का अनुभव

गुरुदेव के अवतरण दिवस पर पूरे गुरुपरिवार को मेरी तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं। आज गुरुदेव ने मुझे 2 साल बाद अपनी अनुभूति शेयर करने की प्रेरणा दी है।

मैंने गुरुदेव जी का ध्यान व मंत्र जाप, 24 अक्टूबर 2018 से शुरू किया था। पहले ही दिन ध्यान में मुझे नील वर्ण शरीर में बहुत बड़े नाग पर लेटे हुए जो देह दिखाई दी, वैसी मैंने विष्णु जी की शेषनाग पर लेटे हुए देखी थी, ये वैसा ही दृश्य था। मुझे ध्यान के बाद विश्वास ही नहीं हो रहा था कि मैंने जो ध्यान में दृश्य देखा वो सत्य था ! फिर दूसरे दिन मुझे ध्यान में एक काले पत्थर की खड़ी हुई मूर्ति पाँव से दिखनी शुरू हुई और ऊपर तक देखते हुए, मैंने देखा कि उस मूर्ति पर पत्तों की माला पहना रखी है और सारी मूर्ति पर पत्ते ही पत्ते दिखाई दे रहे थे। वैसी मूर्ति मैंने पहले नहीं देखी थी। लेकिन ध्यान में मुझे ये एहसास हो रहा था कि जैसे मुझे कोई बता रहा है कि ये श्री नाथ जी की मूर्ति है।

यह सुनते ही मुझे ऐसा झटका लगा कि श्री नाथ जी की मूर्ति और पत्तों का श्रंगार जैसा दृश्य मुझे दिख रहा था और जो मन में विचार आ रहे थे कि ऐसा कैसे हो सकता है। (यह बात तो मुझे 10 साल पहले किसी ने बोली थी। आज यह सब जो हो रहा है वो तो उससे मेल खा रहा है। मुझे उस दिन भी बहुत आश्चर्य हुआ)

ध्यान के तुरन्त बाद मैं अपने आप 10 साल पुरानी बात को याद भी कर रही थी और आश्चर्य भी हो रहा था। क्योंकि 10 साल पहले जन्माष्टमी के दिन मेरी एक सहेली मुम्बई में श्री नाथजी के मन्दिर में जा रही थी और उसने मुझे कहा कि आओ, आप भी मन्दिर दर्शन के लिए चलो। उस समय मेरे पति का ऑपरेशन हुआ था और उसी दिन अस्पताल से डिस्चार्ज होकर घर आए थे। मैंने अपनी सहेली को अपनी समस्या बताई और कहा कि आप जाइए, भगवान ने चाहा तो हम फिर कभी दर्शन करने चलेंगे। तब मेरी सहेली ने बताया था कि अब जन्माष्टमी पर श्रीनाथजी का रोज नया श्रृंगार होता है तो

www.the-comforter.org

आज पान के पत्तों का श्रृंगार है।

ध्यान में श्रीनाथजी पर लगे पत्तों का श्रृंगार का दृश्य मैं भुला नहीं पा रही थी। उस दिन मैं इतनी भावुक हुई कि अपने आप पर विश्वास करना मुश्किल हो रहा था। ऐसे ही 3-4 दिन तक लगातार मुझे ध्यान में अलग-अलग दिव्य दर्शन हुए। अपने आप मन में यह भाव आ रहा था कि एक गुरु की शरण में जाकर ही हम गोविंद के दर्शन कर सकते हैं।

गुरुदेव के द्वारा बताए गए सिद्धयोग के बारे में मुझे स्पिरिचुअल सांइस पत्रिका पढ़कर ज्यादा समझ आया। ध्यान और मंत्र जाप शुरू करते ही, मेरा मंत्र भी अजपा हो गया और मुझे नाद भी सुनने लग गया था। गुरुदेव ने और भी बहुत सी अनुभूतियाँ भौतिक जीवन में करवाईं। उनके बारे में लिखना तो संभव ही नहीं है।

पहले मैं घर में अकेली ही गुरुदेव का ध्यान करती थी। तब तक मेरे पति अपनी दैनिक पूजा जो वो मन्दिर में करते थे, वही रूटीन चल रहा था।

मेरे घर में लकड़ी का मन्दिर था जिसमें कुछ तस्वीरें थीं जैसे साईं बाबा, हनुमान जी, शिव-पार्वती। हमारी हनुमान जी में बहुत आस्था थी। पति दोनों समय हनुमान चालीसा जरूर पढ़ते थे और मेरा भी यही रूटीन था। मैंने गुरुदेव की फोटो मन्दिर में ना रखकर कहीं और लगा रखी थी क्योंकि गुरुभाई-बहनों ने कहा था कि मन्दिर में रखने से आस्था डिवाईड हो जाएगी।

एक दिन अचानक मेरे घर में मन्दिर गिर जाने से, मन्दिर में रखी सारी तस्वीरें खण्डित हो गईं। हम खण्डित तस्वीरों को मन्दिर में नहीं रख सकते इसलिए खाली मन्दिर देखकर मन दुखी हो रहा था। तब मेरे पति ने कहा कि गुरुदेव की फोटो को मन्दिर में रख लो। मैंने तुरन्त गुरुदेव की तस्वीर को हाथ जोड़कर मन्दिर में स्थापित कर लिया। मन प्रसन्न हो रहा था। मन से ऐसा भाव आ रहा था कि गुरुदेव ने अपने आप ही जगह बना ली। अब तो मेरे पति भी गुरुदेव का ध्यान और मंत्र जाप करते हैं।

अन्त में मैं यही कहना चाहती हूँ कि गुरुदेव द्वारा बताए सिद्धयोग मार्ग पर चलकर मन में एक असीम शांति और आनन्द का अनुभव होता है। मन हर समय प्रसन्न रहता है। गुरुदेव के चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम। जय गुरुदेव ! जय दादा गुरुदेव !

-अमिता,
सिरसा, हरियाणा

www.the-comforter.org

'मैं हूँ ना !'

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग व दादा गुरुदेव शिव लहरी बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी के चरणों में कोटि-कोटि दण्डवत प्रणाम।

वर्ष 2006 में सबसे पहले वीर तेजा मन्दिर के प्रांगण, भोपालगढ़, जोधपुर में आयोजित ध्यान योग शिविर में गुरुदेव की फोटो से ध्यान किया। तब तस्वीर से आकर्षण महसूस हुआ। उस समय मैं आँतों (पेट) की बीमारी से ग्रसित था। नाम जप व ध्यान से यह बीमारी धीरे-धीरे ठीक हुई। उसके बाद अर्थात आज से (29.11.2020) से पाँच-छः वर्ष पहले पहली बीमारी से भी अधिक गंभीर बीमारी से ग्रसीत हो गया। मेरा शरीर खींचा जा रहा था व लगातार तेज सिर दर्द हो रहा था। मानो अगले ही क्षण प्राण निकल जायेंगे।

उस समय एकाग्रता पूर्वक नाम जप करने में बाधा उत्पन्न होती तो गुरुदेव को करुण पुकार से याद करता तो गुरुदेव कहते "मैं हूँ ना" और ऐसा महसूस होता कि मेरा सिर गुरुदेव के चरणों में है।

असहनीय दर्द होने पर एम्स जोधपुर अस्पताल में दिखाता और इलाज लेता। नाम जप व ध्यान करता रहता। इस दौरान जोधापुर आश्रम से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका 'स्पिरिचुअल साइंस' में प्रकाशित होने वाले लेख

www.the-comforter.org

जैसे राजा जनक, लाहड़ी महाशय, अष्टावक्र गीता, योगानन्द जी, पतंजली के योगसूत्र, विवेकानन्द जी, रामकृष्ण परमहँस, महर्षि अरविन्द में से अधिकांश प्रश्नों के उत्तर मिल जाते और मनबल मजबूत होता। प्रत्येक महीने की 25 तारीखा के बाद पत्रिका आने का इंतजार रहता।

एक बार असहनीय दर्द होने पर हम दोनों जोधपुर आश्रम गये। वहाँ ध्यान किया तो 90 प्रतिशत आराम महसूस हुआ। ऐसा लगा मानों काशी जी जोधपुर आश्रम ही है। इस प्रकार दस-पन्द्रह दिन बीमारी बढ़ती रहती व ठीक होती रहती ऐसा करते-करते 5-6 वर्ष में गुरुदेव की दया से आज पूर्णतया स्वस्थ हूँ।

मेरे से सम्बंधित असमंजस्यपूर्ण प्रश्न होने पर गुरुदेव से प्रश्न पूछा। उसका गुरुदेव ने एक डेढ़ वर्ष में उत्तर दिया। अतः आराधना में सम्पूर्ण कष्ट गुरुदेव को सौंपकर पूर्ण समर्पण भाव से नाम जप व ध्यान करते हुए गृहस्थ जीवन जीना चाहिए। आराधना में सौगन्धा किसी की नहीं लेनी चाहिए क्योंकि वह टूटने पर शारीरिक परेशानी बढ़ती है। बीमारी ठीक होने में कम या अधिक समय लग सकता है परन्तु ठीक जरूर होती है। आराधना करते-करते भी तकलीफ हो जाती है। एकाग्रता पूर्वक नाम जप से समस्या शीर्घ ठीक होती है।

सद्गुरुदेव से बार-बार प्रार्थना है कि हमारे समान सभी को शीघ्र अति शीघ्र अपनी शरण में ले लें। इस मासिक पत्रिका का विश्व का प्रत्येक व्यक्ति प्रति माह अध्ययन करे।

नाम- भींयाराम
भोपालगढ़, जोधपुर

www.the-comforter.org

Distributing the Eternal Bliss.....

-Gurudev Shri Ramlal Ji Siyag
(15 June 1988)

From the very beginning, I have made it clear that I have never ever studied any religious scriptures. Human effort or intellect didn't play any role in whatever I have received. I kept receiving everything unintentionally.

People of this era wonder how this is possible without any effort and without any desire. But this is a fact. Different kinds of powers and 'Siddhis' kept coming but some unknown power didn't allow me to get even slightly attracted to them.

During this time, I came face to face with the illusory power of God (Brahma, Vishnu, Mahesh). The first person was walking straight and he crossed me while walking straight without getting affected by my presence. I was made to experience him as 'Vishwakarma'. The second person was very restless. Every part of his was moving all the time. He could see in all directions in fraction of a second. I was made to experience him as 'Narayana'. In the mean time the third person came running saying, "Killed everyone."

At that moment all three of them were just crossing me. The second person asked him, "Can you kill him?" He said, "Yes." He then pointed towards me. They were going from south to north and I was standing at a little distance in a corner on their left-

hand side facing the east. The third person started walking towards me without even looking at me. After walking a few steps, the moment he looked at me, he stood still out of hesitation and shame, and said to the second person, "I respect him a lot. How can I kill him?" Whatever he said meant somewhat similar to this. Then the second person teased him about it and the three of them left.

This way I constantly came face to face and also had a direct realization of all the powers up to the 'Agamlok'. An old man, who had faith in saints, used to come and sit near my seat at my work place and ask about this kind of experiences with great interest.

Once, during the time of my spiritual practice, someone said that every verse of the Bhagwat Geeta is a 'swayam siddha mantra' so it is not required to 'siddha' it and its chanting shows miracles immediately.

After hearing this, I started chanting the 38th, 39th and the 40th verse of chapter 11 of the Geeta. After a few days, one morning when I was lying in a half-awake state at around 5:00 am, a well-built young man stood right in front of me with folded hands. I didn't know him so I asked him, "Who are you?" He said 'Soham' (I am That) but I heard 'Sohan' because I thought he is telling his name. I said, "I don't know you, why are you here?" He said that I had called him. I said, "I don't know you so how can I have any work with you? You may go." and so he left.

Later I was explained about 'Soham' (I am That) then I understood that he was not 'Sohan'. In this relation, when I gathered more information from that same old man, I was very

www.the-comforter.org

surprised. I was lost in deep thought for few days that Lord Shiva can destroy the entire mankind then how can he not kill me? Ultimately what am I, who am I?

Once I had gone to my village for some days. My son got a small book named 'Yuhanna' from somewhere. I started reading it as I had no other work. That book for Christians gave me a lot of joy. I couldn't understand what was there in the book that impressed me so much but I got the answer to my question. I underlined that part of the book which was a reply to my question.

I was extremely overwhelmed by this answer. Out of shyness and hesitation, I have not told about this to anyone till date.

Before this also, I was shown the scenes of coming in contact with foreigners and that is ongoing till date. This is the only reason for writing a letter to Washington University but in that letter also I have tried to explain the situation realistically but out of hesitation, have not mentioned a word in this context.

The part of that small book 'Yuhanna' which was a reply to my question is as follows:

"I will send a helper from the Father, the Spirit of truth, who is originated from the father. When that Helper will come, He will bear witness about me and you will also bear witness about me because you have been with me from the beginning."

to be continued....

भगवान् की अवतरण प्रणाली

-श्री अरविन्द

''यद्यपि मैं प्राणियों का अज अविनाशी ईश्वर हूँ तो भी मैं अपनी माया से अपने-आपको सृष्ट करता हूँ।'' अपनी प्रकृति के कार्यों का अधिष्ठाता होकर।

यहाँ ईश्वर और मानव-जीव या पिता या पुत्रकी, दिव्य मनुष्य की कोई बात नहीं है, बल्कि केवल भगवान् और उनकी प्रकृति की बात है। भगवान् अपनी ही प्रकृति के द्वारा मानव-आकार, प्रकार और साँचे के अन्दर रहकर कर्म करना स्वीकार करते हैं, तो भी उसके अन्दर भागवत चेतना और भागवत शक्तिको ले आते हैं और शरीर के अन्दर प्रकृति के कर्मों का नियमन वे उसकी अंत:स्थित और ऊर्ध्वस्थित आत्मा-रूप से करते हैं, 'प्रकृति स्वां अधिष्ठाय।'

ऊपर से सदा ही शासन करते हैं, क्योंकि इसी तरह वे समस्त प्रकृति का शासन चलाते हैं, और मनुष्य-प्रकृति भी इसके अंतर्गत है, अन्दर से भी वे स्वयं छिपे रहकर सारी प्रकृति के ईश्वर रूप में भगवान् की सत्ता का, अंतर्यामी का सचेतन ज्ञान रहता है। यहाँ प्रकृति का संचालन ऊपर से उनकी गुप्त इच्छा के द्वारा स्वर्गस्थ पिता की प्रेरणा के द्वारा नहीं होता, बल्कि भगवान् अपने प्रत्यक्ष प्रकट संकल्प से ही प्रकृति का संचालन करते हैं। यहाँ किसी मानव मध्यस्थ के लिये कोई स्थान नहीं है, क्योंकि यहाँ भूतानां

ईश्वर अपनी प्रकृति (प्रकृतिं स्वां) का आश्रय लेकर, किसी जीव की विशिष्ट प्रकृति का नहीं, मानव-जन्म के जामे को ओढ़ लेते हैं।

बड़ी विलक्षण है, जल्दी समझ में आनेवाली नहीं, मनुष्य की बुद्धि के लिए इसे ग्रहण कर लेना आसान नहीं, इसका कारण भी स्पष्ट है-अवतार स्पष्ट रूप से मनुष्य जैसे ही होते हैं। अवतार के सदा दो रूप होते हैं-भागवत रूप और मानव-रूप। भगवान् मानव-प्रकृति को अपना लेते हैं, उसे सारी बाह्य सीमाओं के साथ भागवत चैतन्य और भागवत शक्तिकी परिस्थिति, साधन और कारण तथा दिव्य जन्म और दिव्य कर्म का एक पात्र बना लेते हैं और यही होना चाहिए, वरना अवतार के अवतरण का उद्देश्य ही पूर्ण नहीं हो सकता।

अवतरण का उद्देश्य यही दिखलाना है कि मानव-जन्म, मनुष्य की सब सीमाओं में रहते हुए भी दिव्य जन्म और दिव्य कर्मकासाधन और कारण बनाया जा सकता है, अभिव्यक्त दिव्य चैतन्य के साथ मानव-चैतन्य का मेल बैठाया जा सकता है। उसका धर्मान्तरण करके उसे दिव्य चैतन्य का पात्र बनाया जा सकता है, और उसके साँचे को रूपांतरित करके उसके प्रकाश, प्रेम, सामर्थ्य और पवित्रता की शक्तियों को ऊपर उठाकर उसे दिव्य चैतन्य के अधिक समीप लाया जा सकता है।

अवतार यह भी दिखाते हैं कि यह कैसे किया जा सकता है। यदि अवतार अद्भुत चमत्कारों के द्वारा

www.the-comforter.org

ही काम करें, तो इससे अवतरण का उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता। असाधारण अथवा अद्‌भुत चमत्कार रूप अवतार के होने का कुछ मतलब ही नहीं रहता। यह भी जरूरी नहीं है कि अवतार असाधारण शक्तियों का प्रयोग- जैसे कि ईसा के रोगियों को आराम कर देनेवाले तथाकथित चमत्कार -करें ही नहीं, क्योंकि असाधारण शक्तियों का प्रयोग मानव-प्रकृति की संभावना के बाहर नहीं है। परन्तु इस प्रकार की कोई शक्ति न हो तो भी अवतार में कोई कमी नहीं आती, न यह कोई मौलिक बात है। यदि अवतार का जीवन असाधारण अतिशबाजी का खेल हो तो इससे भी काम न चलेगा।

अवतार ऐंद्रजालिक जादूगर बनकर नहीं आते, प्रत्युत मनुष्य-जाति के भागवत नेता और भागवत मनुष्य के एक दृष्टांत बनकर आते हैं। मनुष्योचित शोक और भौतिक दुःख भी उन्हें झेलने पड़ते हैं और उनसे काम लेना पड़ता है, ताकि वे यह दिखला सकें कि किस प्रकार इस शोक और दुःख को आत्मोद्धार का साधन बनाया जा सकता है।

ईसा के दुःख को आत्मोद्धार का साधन बनाया जा सकता है। ईसा ने दुःख उठाकर यही दिखाया। दूसरी बात उन्हें यह दिखलानी होती है कि मानव-प्रकृति में अवतरित भागवत आत्मा इस शोक और दुःखको स्वीकार करके उसी प्रकृति में उसे किस प्रकार जीत सकता है। बुद्ध ने यही करके दिखाया था। यदि कोई बुद्धिवादी ईसा के आगे चिल्लाया

होता 'तुम यदि ईश्वर के बेटे हो तो उतर आओ इस सूली पर से।' अथवा अपना पाण्डित्य दिखाकर कहता कि अवतार ईश्वर नहीं थे, क्योंकि वे मरे और वह भी बीमारी से-दुःखद पीड़ाओं के साथ तो वह बेचारा जानता ही नहीं कि वह क्या बक रहा है, क्योंकि वह तो विषय की वास्तविकता से ही वंचित है।

भागवत आनन्द के अवतार से पहले शोक और दुःख को झेलने वाले अवतार की भी आवश्यकता होती है, मनुष्य की सीमा को अपनाने की आवश्यकता होती है, ताकि यह दिखाया जा सके कि इसे किस प्रकार पार किया जा सकता है। और, यह सीमा किस प्रकार या कितनी दूर तक पार की जायेगी, केवल आंतरिक रूप से पार की जायेगी या बाह्य रूप से भी। यह बात मानव-जाति के उत्कर्ष की अवस्था पर निर्भर है, यह सीमा किसी अमानव चमत्कार के द्वारा नहीं लांघी जाएगी।

अब यह प्रश्न उपस्थित होता है और यही असल में मनुष्य की बुद्धि के लिये एकमात्र बड़ी समस्या है क्योंकि यहाँ आकर मानव-बुद्धि अपनी ही सीमा के अन्दर लुढ़कने-पुढ़कने लगती है-कि अवतार मानव-मन-बुद्धि और शरीर का ग्रहण कैसे करता है? कारण इनकी सृष्टि अकस्मात् एक साथ इसी रूप में नहीं हुई होगी, बल्कि भौतिक या आध्यात्मिक या दोनों ही प्रकार के किसी विकास क्रम से ही हुई होगी। इसमें संदेह नहीं कि अवतार का अवतरण, दिव्य जन्म की ओर मनुष्य के आरोहण के समान ही तत्वतः एक आध्यात्मिक व्यापार है, जैसा कि गीता के

www.the-comforter.org

'आत्मानं सृजामि' वाक्य से जान पड़ता है, यह आत्मा का जन्म है। परन्तु फिर भी इसके साथ एक भौतिक जन्म तो लगा ही रहता है। तब यह प्रश्न उपस्थित होता है कि अवतार के मानव-मन और शरीर का कैसे निर्माण होता है।

यदि हम यह मान लें कि शरीर सदा ही वंशानुक्रमिक विकास से निर्मित होता है, अचेतन प्रकृति और तदनुस्यूत प्राणशक्ति शरीर निर्माण का यह कार्य किया करती है, इसमें व्यष्टिगत अंतरात्मा के करने की कोई बात नहीं, तो मामला सीधा हो जाता है। तब यही मान लेना पड़ेगा कि किसी शुचि और महत् वंश के विकास-क्रम से ही यह अन्नमय और मनोमय शरीर भागवत-अवतार के उपयुक्त तैयार होता है और तब अवतरित होने वाले भगवान् उस शरीर को धारण कर लेते हैं।

परन्तु गीता के इसी अवतार वाले श्लोक में पुनर्जन्म का सिद्धांत स्वयं अवतार पर भी हिम्मत के साथ घटाया गया है, और पुनर्जन्म के संबंध में सामान्य मान्यता यही है कि पुनर्जन्म ग्रहण करने वाला जीव अपने पिछले आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक विकास के अनुसार अपने मनोमय और भौतिक शरीर को निर्धारित करता या यों कहें कि तैयार करता है।

जीव स्वयं अपना शरीर निर्माण करता है, उसका शरीर उससे पूछे बिना यों ही तैयार नहीं कर दिया जाता। तो क्या इससे हम यह समझ लें कि सनातन या सतत् अवतार अपने अनुकूल अपना मनोमय और अन्नमय शरीर मानव-विकास की आवश्यकता और गति के अनुसार आप ही निर्माण करते और इस तरह युग-युग में प्रकट हुआ करते हैं? इसी तरह के किसी एक भाव से कुछ लोग विष्णु के दस अवतारों की व्याख्या करते हैं।

पहले कई पशु रूप, बाद में नरसिंह-मूर्ति, तब वामन-मूर्ति, उसके बाद प्रचण्ड आसुरिक परशुराम, फिर देव-प्रकृति-मानव महत्तर राम, और काल के हिसाब से पहले पर स्थान के हिसाब से अंतिम, पूर्ण दिव्य भावापन्न मनुष्य श्रीकृष्ण -क्योंकि आखिरी अवतार 'कल्कि' केवल श्रीकृष्ण के द्वारा आरंभ किये हुए कर्म को ही संपन्न करते हैं। पहले के अवतार समस्त संभावनाओं से मुक्त जिस महत् प्रयास को प्रस्तुत कर गये हैं, कल्कि उसी को शक्ति देकर सिद्ध करते हैं।

हमारी आधुनिक मनोवृत्ति के लिए इसे स्वीकार करना कठिन है, किन्तु ऐसा मालूम होता है कि गीता की भाषा का रुख इसी ओर है। अथवा जब गीता इस समस्या का साफ तौर पर हल नहीं करती तब हम अपने किसी दूसरे तरीके से इस प्रश्न को हल कर सकते हैं और कह सकते हैं कि अवतार का शरीर तो जीव के द्वारा निर्मित होता है पर जन्म से ही भगवान् उसे धारण करते हैं, अथवा यह भी कह सकते हैं कि इस शरीर को गीतोक्त 'चत्वारो मनवः' अर्थात् प्रत्येक मानव मन और शरीर के आध्यात्मिक रूप - प्रस्तुत करते हैं।

इस तरह से कहना अवश्य ही गूढ़ रहस्यमय क्षेत्र की गहराई में प्रवेश करना है जिसकी बातें आधुनिक बुद्धिवादी लोग अभी तो सुनना ही नहीं चाहते, परन्तु जब हमने अवतार का होना मान लिया तब रहस्यमय क्षेत्र में तो प्रविष्ट हो ही गये और जब प्रविष्ट हो गये तो एक-एक कदम मजबूती से रखते हुए बढ़े चलना ही उत्तम है।

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

सोमवार ४ जनवरी पौष सु. १५ वि. २० पौष सं. २०४४

भारत का भाग्योदय होने ही वाला है। हानि क्या है अवसर से चूकना

यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम॥
परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्कृताम।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे॥

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता के चौथे अध्याय में अर्जुन को युग युग में स्वयं प्रकट होने का स्पष्ट संकेत किया है। संसार में जब धर्म का लोप हो जाता है तब भगवान दुष्टों का विनाश करने और संत लोगों का कल्याण करके पुनः संसार में धर्म स्थापित करने के लिए युग युग में अवतार लेते हैं। पैगम्बर यानि संत लोग संसार में प्रकट होकर अपनी आध्यात्मिक शक्ति और त्याग के द्वारा सात्विक चेतना फैलाने का कार्य करते हैं। संतों के उपदेशों से जब काम-चलना बन्द हो जाता है और संसार में पूर्ण रूप से तामसिक शक्तियों का साम्राज्य स्थापित हो जाता है, ऐसी स्थिति में भगवान अवतार लेते हैं। संसार भर से पूर्ण रूप से तामसिक शक्तियों का सफाया करके और सात्विक शक्तियों का एक छत्र साम्राज्य स्थापित करके स्वयं अपने धाम को पधार जाते हैं। संसार में पूर्ण शान्ति और सात्विक शक्तियों का साम्राज्य भगवान के अवतार के बिना सम्भव नहीं है। स्वयं अवतार लेने से पहले कुछ ऐसे संतों को भेजते हैं जो भगवान के अवतार के सम्बन्ध में भविष्य वाणियां करते हैं। ठीक इसी प्रकार की भविष्य वाणियां संसार भर के विभिन्न धर्मों के संत काफी समय से करते आ रहे हैं। मोटे तौर पर सभी एक ही बात कहते हैं कि वह शक्ति भारत के उत्तरी भाग से प्रकट होकर अपने क्रमिक विकास के साथ इस सदी के अन्त तक पूरे संसार को अपनी तरफ आकर्षित कर लेगी। संसार भर के सभी धर्मों के लोग उसकी तरफ इतने आकर्षित होंगे कि सब का ध्यान उस शक्ति पर केन्द्रित हो जायगा। सारे संसार के लोग उसके आदेशों का पालन करने लगेंगे। इस प्रकार २१वीं सदी में संसार भर में उस शक्ति के प्रभाव से सात्विक शक्तियों का साम्राज्य स्थापित हो जायगा और भारत पुनः अपने जगद्गुरु के पद पर आसीन होकर मानव मात्र (जीवमात्र) के कल्याण हेतु कार्य प्रारम्भ कर देगा।

Om Lal
04/02/1988

भौतिक विज्ञान की सीमा

''सभी उपलब्धियों के बावजूद, चाहे वह कितनी भी सुख-सुविधा पा ले, फिर भी भौतिक विज्ञान कभी मानव जाति के लिये सत्ता का आंनद और उसकी स्फूर्ति नहीं ला सकता।''

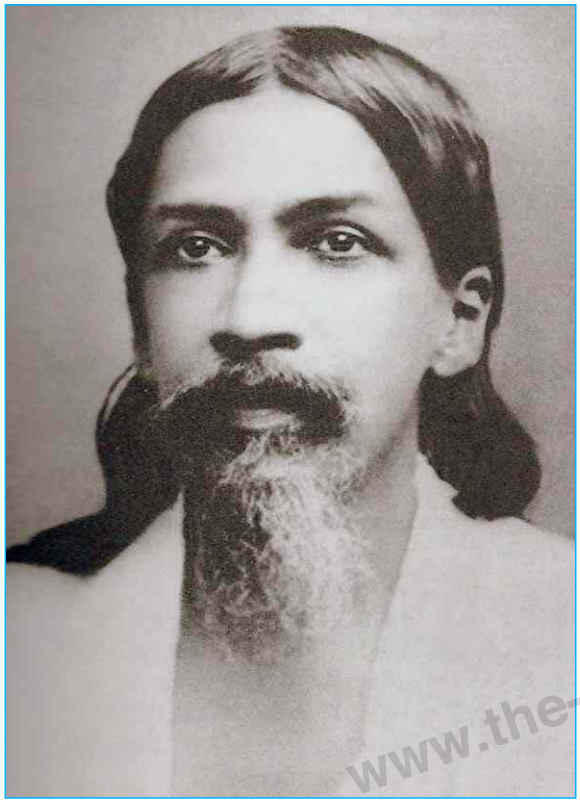

भौतिक विज्ञानः- भौतिक ज्ञान, बाहरी चीजों के ज्ञान का चाहे अधिक-से-अधिक विस्तार हो जाये, वह दूर-दूर के सौर-मंडलों की खबर ले आये, पृथ्वी और सागरों की अधिक-से-अधिक गहराइयाँ छू ले, भौतिक तत्त्व और ऊर्जा की सूक्ष्म-से-सूक्ष्म शक्तियों का भी पता लगा ले, फिर भी हमारे लिये इससे कोई तात्त्विक लाभ न होगा, यह वह चीज न होगी जिसे प्राप्त करने की हमें सबसे अधिक आवश्यकता है। इसलिये भौतिक विज्ञान की चौंधियाने वाली विजयों के बावजूद, जड़वाद का शस्त्र अंत में चलकर असहाय और व्यर्थमत सिद्ध होता है।

www.the-comforter.org

इसीलिये अपनी सभी उपलब्धियों के बावजूद, चाहे वह कितनी भी सुख-सुविधा पा ले, फिर भी भौतिक विज्ञान कभी मानव जाति के लिये सत्ता का आंनद और उसकी स्फूर्ति नहीं ला सकता।हमारा सच्चा आनंद हमारी समस्त सत्ता के विकास में, जीवन के समस्त क्षेत्र की विजय में, बाह्य के साथ-साथ और बाह्य से बढ़कर, आंतरिक जीवन में प्रकट और गुप्त स्वभाव में है।हमारी सच्ची पूर्णता, हमने जिस स्तर पर शुरू किया था उसी पर बड़े-बड़े चक्र बनाने से नहीं, उनके पार जाने से आयेगी।और यह सब आध्यात्मिक जीवन से ही संभव है।

-महर्षि श्री अरविन्द घोष, 'लाल कमल' पुस्तक

सद्गुरुदेव की दिव्य आवाज

गुरुदेव के शब्दों में, ''जो गुरु अपने शिष्य को दीक्षा देता है- वेदों की देता है, उपनिषदों की देता है, भगवान् के नाम की देता है तो उसकी आवाज में Weight (शक्ति) होता है।''

गुरुदेव की दिव्य आवाजः- अमिश्र, गुरु गम्भीर, अंतर्भेदी और भारी रहस्यमयी आवाज जो सत्ता के अन्तस्तल में उतर जाती है, वहाँ निनादित और झंकृत होती है। यह आवाज भूत को झकझोर देती है, चीर देती है, दुर्भावनाओं को भगा देती है और चारों ओर के वातावरण को पुण्य-पुनीत बना देती है। विस्मयकारी है यह, अंतरात्मा सुनती है, यह आवाज। यह आत्मा से आती है और आत्मा को ही उजागर करती है।

अलौकिक है यह, असाधारण है यह, हमें ऊपर उठा ले जाती है, सारी सत्ता को झिंझोड़ देती है, और हमारी अभीप्सा में प्रगाढ़ता ले आती है। यह हमें सच्चे और सचेत बनने की प्रेरणा देती है। अनूठी है यह, अंतर की ज्योति जगा देती है। यह मधुर है साथ ही शक्तिशाली भी।

यह गहन, गम्भीर, स्पष्ट और अंतर्भेदी आवाज में घोषणा करती है, ''पवित्र और श्रद्धावान् बनो, सच्चाई के साथ अभीप्सा करो, मिथ्यात्व के अनुसरण से बचो।''

अद्वितीय है गुरुदेव की आवाज क्योंकि इसमें अभिव्यक्त करनेवाली शक्ति के स्पन्दन हैं। यह कोई मामूली आवाज नहीं। यह शांत, स्पष्ट, अमिश्र आवाज प्रेम और प्रकाश से भरी है और उससे भी ज्यादा अनन्त करुणा से उन सब तक पहुँचती है, जो इसे सुनते हैं। यह इतनी प्रभावशाली है कि सभी हृदयों में तीव्र अभीप्सा जगा दे। इसमें परमरोगहारी शक्ति है, और इसके स्पन्दन, कठिनाइयों को परे हटा देते हैं। बाधा-विघ्न तितर-बितर हो जाते हैं, मानो किसी ने मोहनी शक्ति डाली हो उन पर। हम एक बड़े भार से मुक्ति महसूस करते हैं।

गुरुदेव की दिव्य आवाज अज्ञान के पर्दों को चीर देती है। और चेतना को जगाने के लिए अनजाने ही चुपचाप हृदय में उतर जाती है। यह आवाज मस्तिष्क को सभी मानसिक प्रभावों और चिंताओं से मुक्त कर देती है, जो हम पर हावी हुई रहती हैं, हमें सताती हैं। हममें वह प्रबल शक्ति और विशिष्ट गुण जगाती है, जो जड़तावश हमारे भीतर सुप्त पड़े हैं। यह शारीरिक तमस को झकझोर देती है, हमारी निश्चेतना में से डर को दूर भगाती है, उन बाधाओं को परे हटा देती है जो हमारा विरोध करती हैं, हमारा आधार दृढ़ कर देती है और लक्ष्य की ओर प्रस्थान करने के लिए हमें शक्ति से भर देती है।

यह आवाज स्वयं में चेतना है। और निश्चेतना में चेतना को जगा देती है। यह आवाज उस 'परम' से आती है और 'वही' इसके द्वारा स्वयं को व्यक्त करता है। यह आवाज जिसने केवल भागवत् संकल्प को व्यक्त किया है, जिसने 'परम सत्य' के सिवा और कुछ नहीं उच्चारा वह 'भागवत शक्तियों' को

www.the-comforter.org

अभिव्यक्त करने के लिए असाधारण शक्ति धारण किए है। यह स्पंदनशील है और हमारी अभीप्सा को वेग प्रदान करती है। हमारे विश्वास को आश्वासन दिलाती है और सबसे ज्यादा अशुभ भावनाओं के बादलों को छिन्न-भिन्न कर देती है।

कोमल, स्पष्ट, पवित्र, शक्तिशाली, तेजस्वी और ओजपूर्ण यह आवाज सर्वत्र गूँज जाती है। स्निग्ध आभा लिए जो भागवत संकल्प की शक्तियों को निर्देशित और पोषित करती है। गुरुदेव की आवाज सौम्य प्रशांति जीवनदायी प्राण के समान और उस प्रेम के समान जो दुःखी और शोकाकुल हृदयों को दिलासा देता है और सहलाता है। यह आवाज जो स्पंदन प्रेषित करती है। वह हृदय में 'भगवान्' के लिए अभीप्सा जगाता है।

गुरुदेव की पावन आवाज एक गूँज पैदा करती है, जो संगीत की तान की तरह ध्वनित और प्रतिध्वनित होती रहती है, जो अंतर्मन को भेद जाती है, आवृती करती जाती है ताकि कोषाणु इस स्पंदन के प्रति सचेत हो सकें और चेतना भगवान् के साथ सम्पर्क से मिले परमानंद में प्रकाश की ओर खुल सके। अनंत से निकली यह आवाज अनंत में समा जाती है।

गुरुदेव की आवाज जो हम सबके लिए इतनी परिचित है, जो इतनी स्पष्ट और सरल होते हुए भी असामान्यरूप से विश्वास दिलाती है, वह अज्ञात की ओर अभियान के लिए आश्वासन देती है, संकल्प पैदा करती है। कायरों में अजेय साहस भरती है। आतुर अभीप्सुओं में शुभेच्छा और दया के भाव जगाती है, प्यासी आत्माओं में यह अभीप्सा की अग्नि जलाती या पावनकारी लौ लगा देती है। अधिकार के साथ आदेश भी देती है यह आवाज, साथ ही मधुर और सुखदायी भी है-यह आवाज।

साधारण लोगों में भी यह रोमांच पैदा करती है, उनमें एक आशा का, एक प्यार का, एक एहसास का संचार करती है कि हम सब कुछ गंवा नहीं बैठे, बल्कि जो पहले आपके पास था उससे अनंत गुणा, अब आपको मिला है। औरों के लिए यह उन वैभवों को उजागर कर देती है जो अंदर छिपे पड़े है, और किन्हीं अन्य के लिए यह कुँजी है, संसार के रहस्यों को अनावरित करने की।

गुरुदेव की पवित्र आवाज जो बहुत धीर, स्थिर और प्रशांत है लेकिन एकाधिकार की दृढ़ता और ओजस्विता भी है इसमें। यह अपने को स्पष्ट और निश्चित रूप में व्यक्त करती है, उन गंभीर भावों को व्यक्त करती है जो शब्दों के पीछे छिपे होते है। यह क्षितिजों को वैभव ज्ञान और अवधारणा की ओर खोल देती है, उन्हें विस्तृत आयाम देती है। यह आवाज अंतर में उतर जाती है, उसमें वन्या ला देती है, ऊपर छलछला जाती है, सजीव बनाती है, पुनर्जीवित करती है और अपनी मधुरता से, अपनी छटा से, बल और शक्ति से हर चीज का कायाकल्प कर देती है, और शांत और मुस्कुराती करुणा के साथ विजय श्री ले आती है।

गुरुदेव की सशक्त आवाज उस वातावरण से आवेष्टित है जो हमारे अंदर ऐसी उत्कट अभीप्सा

www.the-comforter.org

जगाता है जो लक्ष्य प्राप्ति तक हमारे प्रयास के संकल्प को भक्ति और भागवत् प्रेम को बल प्रदान करती है।

गुरुदेव की दिव्य आवाज हृदय में गहरे उतर कर केन्द्रीय पुरुष को जगाती है। उस पर्दे को विदारित करती है जो चैत्य अग्नि आवरित किए हुए है ताकि चेतना हमारे जीवन के अधीश्वर की ओर जा सके।

गुरुदेव की आवाज में असाधारण शक्ति है यह समस्वरता, शांति, ज्योति और वैभव विकीर्ण करती है, हर कोषाणु में उस उल्लास के साथ गूँजती और चमकती है जो उस 'परम' को जानने के लिए थिरकता है। यह व्यापक विस्तार लेती है, तरंगों के द्वारा यात्रा करती हुई उन गुह्य भुवनों में सुनी जा सकती है जो सृष्टि का निर्माण करते हैं एवं उससे भी ज्यादा शाश्वत की अक्षय नीरवता में, समूची अभिव्यक्त सृष्टि से परे 'उसकी' शक्ति और भास्वर ज्योति के अचल परमानंद में। गुरुदेव की दिव्य आवाज उस भागवत सन्निधि को मूर्तिमंत करती है, जिससे ब्रह्मनाद निकलता है, जो 'परम' की समृद्धि और विपुलता को 'उसकी' ज्योति को व्यक्त करता है। लेकिन चेतना की अमुक अवस्था में पहुँचे बिना इसे नहीं समझा जा सकता, इसमें जो निहित है उसकी गहराई और महत्त्व को नहीं आंका जा सकता।

कई बार साधक गुरुदेव से बात करते हैं तो गुरुदेव कहते हैं- ''आप मेरी आवाज सुन रहे हो, मेरी आवाज जो आपके कानों में जा रही है, उससे आपमें **Transformation** रूपान्तरण हो रहा है, ये आपको महसूस नहीं हो रहा है, क्योंकि ये आवाज एक **Enlightened** (प्रकाशमयी) **Body** (शरीर) से आ रही है, मेरी **Body Enlightened** है, मेरा शरीर प्रकाशमय है।''

इसलिए हमें सघन नाम जप करना चाहिए तथा यथा संभव समय समय पर गुरुदेव की दिव्य आवाज भी सुननी चाहिए। दिमाग को कभी भी खाली नहीं छोड़ना चाहिए, क्योंकि खाली दिमाग शैतान का घर होता है, दिमाग को खाली छोड़ते ही इसमें अच्छे बुरे विचार आने शुरू हो जाएँगे। और हमारे स्वयं के अंदर के विचार ही हमारी आराधना में सबसे बड़े अवरोधक हैं।

जिन साधकों को अजपा शुरू हो गया, उनको अजपा पर एकाग्र होना चाहिए तथा जिनको नाद शुरू हो गया, उनको नाद सुनते रहना चाहिए। व्यर्थ की बातों में भी समय बर्बाद नहीं करना चाहिए क्योंकि समय बहुत अमूल्य है, समय निकलने के बाद केवल पछतावा ही शेष रह जाता है।

श्रीमां के अनुसार आवाज की शक्ति- ''दुनिया में हर तत्त्व की अपनी आवाज होती है। किसी को यह सुनाई देती है, किसी के लिए नीरव। लेकिन फिर भी, हर तत्त्व अपनी अभीप्सा प्रकट करता है, और जो इन स्तरों की ओर खुले हैं, वे इसे सुन पाते हैं।''

– सुनील शर्मा
बहरोड़ (अलवर)

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

गुरुदेव का प्रवचन (22 मई 2003)

उनके Treatment (इलाज)में चल रहा था। ड्रिप चल रहा था, बंद हो गया। अंदर मामला ही Finish (समाप्त) हो गया तो डॉक्टर ने छुट्टी दे दी। फिर मुश्किल से रात भर निकाली वहाँ जोधपुर में।

मैं यहाँ ज्यादा ही Popular (लोकप्रिय) हूँ। तो रात भर मरा नहीं, दूसरे दिन चार आदमी उठा के मेरे programme में ले आए और लेटा दिया। उसने मुझे खुद बताया। तो वो कहने लगा- "समझने की हिम्मत थी, सुन रहा था, समझ रहा था मगर हाथ पैर हिलाना, मुँह खोलना, आँख खोलना मेरे ताकत के बाहर था। आपने बताया वो, उसी वक्त नाम जप शुरू कर दिया।"

तो जब उसको Diagnose हुआ था एड्स, उस वक्त 65 किलो वजन था उसका, और treatment चलते-चलते 46किलो पर आ गया। आज 86 किलोग्राम है। पिछले 24 नवम्बर को वह मेरे पास आया तो मेरे को कहने लगा कि गुरुजी एक बीमारी से तो बचा दिया आपने, एक और लग गई उसको भी अलग कर दो। मैंने कहा तेरे क्या बीमारी थी? एक नहीं सैकडों आते हैं, हजारों आते हैं। अब किस-किस का जानूँ मैं? तो भईया, एड्स थी। वो रिकॉर्ड दिखाया तो मैंने कहा ठीक है, आराम कर। कहने लगा ये डॉक्टर पीछा नहीं छोड़ते, वो कहते हैं आना पड़ेगा हर महीनें। ये दवाई खानी पड़ेगी, अब उनको नाराज नहीं करता, डर के मारे चला जाता हूँ।

क्रमशः ...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...
कठिनाई में...

योग के आधार

-महर्षि श्री अरविन्द

साधारणतः चेतना शरीर के अंदर आबद्ध रहती है, और मस्तिष्क, हृदय और नाभि के अर्थात् मन, भावावेग तथा इंद्रियबोध के केन्द्रों में केन्द्रीभूत रहती है। जब तुम यह अनुभव करते हो कि यह चेतना या इसका कोई भाग ऊपर जाता है और सिर के ऊपर जाकर स्थान ग्रहण करता है तब इसका मतलब यह है कि वह बंधी हुई चेतना शरीर के बंधन से मुक्त हो रही है। वास्तव में तुम्हारी मनोमय चेतना ही इस तरह ऊपर जाती है, साधारण मन की अपेक्षा किसी उच्चतर वस्तु का संस्पर्श प्राप्त करती है और वहां से आधार के शेष भागों को रूपांतरित करने के लिये उन पर उच्चतर मानसिक संकल्प का प्रयोग करती है। कंपन और उष्णता का अनुभव होता है एक प्रकार के प्रतिरोध के कारण, शरीर और प्राण को इस प्रकार की माँग पूरी करने का और इस प्रकार की मुक्ति का अभ्यास न होने के कारण। जब मनोमय चेतना स्थायी रूप से इस प्रकार ऊपर स्थित हो जाती है अथवा जब चाहे तब ऊपर उठ सकती है तभी मुक्ति की यह प्रथमावस्था सिद्ध हो

जाती है। वहाँ से फिर मनोमय पुरुष उच्चतर स्तरों की ओर अथवा विश्वसत्ता और उसकी शक्तियों की ओर अपने-आपको स्वच्छंदतापूर्वक खोल सकता है और कहीं अधिक स्वतंत्रता और शक्ति के साथ निम्नतर प्रकृति पर क्रिया भी कर सकता है। कि भागवत अभिव्यक्ति प्रशांति और सामंजस्य के द्वारा होती है, न कि सर्वनाशी उथल-पुथल के द्वारा। उथल-पुथल तो सूचित करती है एक संघर्ष को, साधारणतः प्राणमय लोक की परस्पर झगड़नेवाली शक्तियों के संघर्ष को, परंतु प्रायः ही उस संघर्ष को जो निम्नतर स्तर में ही होता है। तुम विरोधी शक्तियों की बात बहुत अधिक सोचा करते हो। इस तरह दुश्चिंता करते रहने के कारण तुम्हें बहुत-से अनावश्यक संघर्षों का मुकाबला करना पड़ता है। अपने मन को विपरीत दिशा से हटाकर समुचित दिशा की ओर एकाग्र करो। श्रीमां की शक्तिकी ओर अपनेआपको खोलो, उनकी संरक्षणता के ऊपर अपना ध्यान एकाग्र करो, ज्योति, स्थिरता, शांति और पवित्रता के लिये तथा दिव्य चेतना और ज्ञान में परिवर्धित होने के लिये प्रार्थना करो।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला सहस्रार में स्थित है और उसकी शक्ति मूलाधार में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है।

उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके चेतन होकर उर्ध्वगमन करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही 'मोक्ष' है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक मृगमरीचिका ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित परमसत्ता की पराशक्ति है अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित उस परम तत्त्व की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, एक समय में, मात्र एक ही व्यक्ति के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह सार्वभौम सत्ता है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को अभूतपूर्व एवं अद्वितीय देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस दिव्य ज्ञान का महाप्रसाद बाँटने, विश्व में अकेले ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो उर्ध्वगमन करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो स्वयं करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् परशिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी श्री मत्स्येन्द्र नाथ जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों- आधि दैहिक, आधि भौतिक व आधि दैविक (Physical, Mental & Spiritual) का शमन (नाश) करता है। इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व विज्ञान सम्बधित समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो। अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है, जो सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।

सिद्धयोग से लाभ-

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

. सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, भय, चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।

. विद्यार्थियों की एकाग्रता एवं याद्दाश्त में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।

. आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।

. गृहस्थ जीवन में रहते हुए 'भोग एवं मोक्ष' दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।

. ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार संभव।

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है ?

सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? ध्यान करके देखें।

शक्तिपात-दीक्षा

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें साधक को सघन मंत्र जाप व ध्यान करना होता है।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामालाल जी सियाग एक सिद्धगुरु हैं जो शक्तिपात दीक्षा से, अपनी दिव्य शक्ति को संजीवनी मंत्र द्वारा शिष्य में संप्रेषित कर, उसकी सुप्तप्त शक्ति, कुण्डलिनी को जाग्रत कर देते हैं।

गुरुदेव सियाग का संजीवनी मंत्र, एक चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।

गुरुदेव की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें - 07533006009

(सभी जाति एवं धर्मों के जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को सस्नेह निमंत्रण)

www.the-comforter.org

ध्यान की विधि

- आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से, खुली आँखों से देखें।
- फिर गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करूण प्रार्थना करें।
- अब आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं) केन्द्रित करते हुए, संजीवनी मंत्र का मानसिक जाप (बिना होंठ-जीभ हिलाए) करते रहें।
- इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान की अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी।
- इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रूप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।
- नाम जप ही ध्यान की चाबी है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय जपें।

Method of Meditation

- Sit in a comfortable position and look at Gurudev's image for a while.
- Then pray to Gurudev to help you meditate for 15 minutes.
- Now close your eyes and while focussing on Gurudev's image at the centre of your forehead, mentally chant (without moving your lips and tongue) the Sanjeevani Mantra given by Gurudev.
- During this time if you undergo automatic yogic movements, then let them happen. Don't try to stop them. After requested time is over, they will stop.
- Meditate in this way for 15 minutes, in the morning and evening, on an empty stomach.
- For profound meditation, chant the mantra as much as possible while performing your daily activities.

मुख्यालय:- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342001 सम्पर्क : +91-2912753699, +91-9784742595
Email: avsk@the-comforter.org, Website: www.the-comforter.org

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365*POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2020 & VALID UP TO 31.12.2022
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

मेरे लिए तो 'गुरु' ही सर्वोपरि है।

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

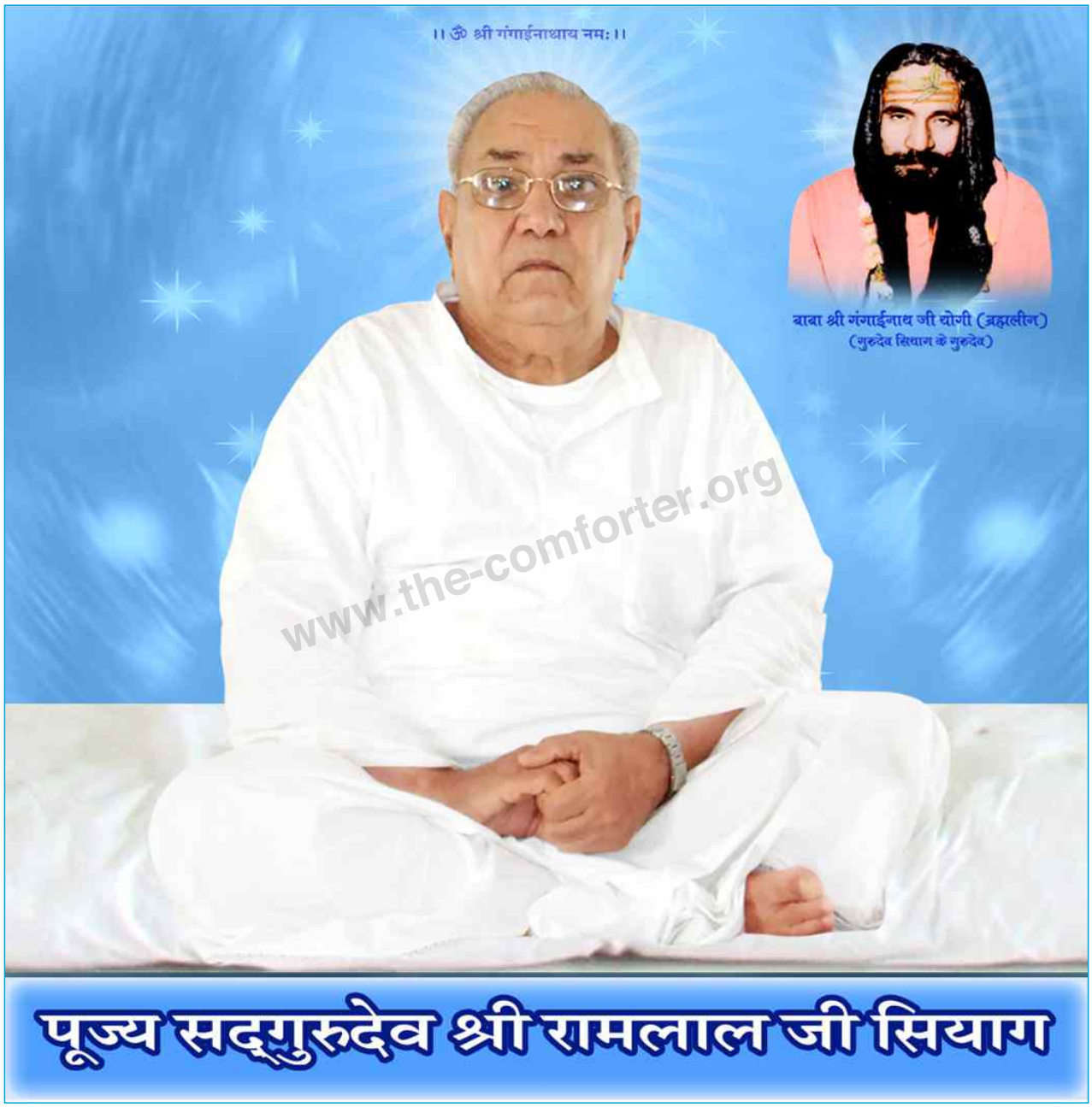

—— अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें ——
Spiritual Science . स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी पोस्ट बॉक्स नं. 41, जोधपुर (राज.) 342001
फोन: + 91 291 2753699, मो. : +91 9784742595 वेबसाइट: www.the-comforter.org

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान्_____

_____

स्वत्वाधिकारी: अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित।